'Research Journey' International Multidisciplinary E- Research Journal
Vol. 2 Issue. 2
ISSN :2348-7143 (Online)
April- June- 2015

इक्कीसवीं सदी की दलित कवयित्रियों की कविता में अभिव्यक्त दलित संवेदना

डॉ.सुनील बाबुराव कुलकर्णी
हिंदी विभागाध्यक्ष
उत्तर महाराष्ट्र विश्वविद्यालय, जलगांव

गजानन सुरेश वानखेडे
शोध छात्र
उत्तर महाराष्ट्र विश्वविद्यालय, जलगांव

दलित कविताएँ सामजिक सम्मान और स्वाभिमान के लिए लिखी गयी है। दलित कविताएँ भारतीय गँवो का दस्तावेज है। दलित कविता अंलकार, छंद की अपेक्षा मानवीय संवेदनाओं से जुड़ा साहित्य है। दलित कविता समता, बंधुता, करुणा के आधार पर रची गयी है।

हिंदी साहित्य में १९९० के बाद से दलित साहित्य की शुरुआत मानी जाती है। दलित लेखकोने अपने अनुभव एवं विचार अपनी रचनाओं के माध्यम से अभिव्यक्त किए। दलित लेखन की विचारधारा पर मा. गौतम बुध्द, कबीर, रविदास, मा. ज्योतीबा फुले एवं डॉ. अंबेडकर के विचारों का स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है। साहित्य की सर्व प्राथमिक विधाओं में दलित लेखन का सृजन हुआ दिखाई देता है। हिंदी साहित्य में दलित लेखन का स्थान महत्वपूर्ण माना जाता है। हिंदी का हर आलोचक, पत्रिकाएँ, लेखक, पत्रकारिता आदि दलित साहित्य पर विचार विमर्श करते हुए दिखाई देते हैं। दलित साहित्य की शुरुआत आत्मकथा लेखन से हुई है।

१९६० के बाद मराठी में अर्जुन बंगाले, दया पवार, नामदेव ढ़साल, शरण कुमार निबांले, बेबी कांबले आदि ने महाराष्ट्र में दलित लेखन की नींव डाली है। दलित समाज के संघर्ष के कारण ही इस समाज का विकास हुआ। भारतीय दलित लेखकोने अपने साहित्य में आत्म सम्मान की बात की है। भारतीय समाजव्यवस्था में दलित समाज को वह सम्मान नहीं मिला, जिसके वह अधिकारी है। भारतीय समाज व्यवस्था में दलित समाज को हमेशा सत्ता में हिस्सेदारी नहीं दी है।

भारतीय पुरातन समाज व्यवस्था में दलितों के पास जमीन नहीं थी। जिसके पास जितनी ज्यादा जमीन वह व्यक्ति का उतना प्रभाव समाज में था। दलितों को जमीन के हक्क से दूर रखा गया। दलितों को सेवा एवं श्रमशीलता के अधिकारी बनाए गये। नियोजन बध्द तरीके से दलितों को ज्ञान के क्षेत्र से दूर रखा गया। भारतीय समाज व्यवस्थाने विवेकशिलता से एक-दूसरे को समझने का प्रयत्न नहीं किया।

कविता साहित्य की प्राथमिक विधा है। दलित कविता में ज्ञान एवं सत्ता केंद्रीय विषय रहे हैं। दलित कविता में अत्याचार, शोषण, छुआ-छूत, उच्च वर्गो द्वारा दलितों को हतोत्सहित करना आदि मुख्य विषय रहे है। हीरा डोम इनकी 'अछूत की शिकायत' यह हिंदी की पहली दलित कविता मानी जाती है। जो सन १९१४ में 'सरस्वती' पत्रिका में छपी। दलित कवयित्रियों में मुख्यत: कौशल पवार, कुसुम मेघवाल, हेमलता महीश्वर, रजनी अनुरागी, नीरा परमार, सुशीला टाकभौर, मेरली के पुन्नूस, पूनम तुषाम, कावेरी, विमल थोरात आदि ने लेखन किया है। इन सभी कवयित्रियों की कविता के मुख्य स्वरों में दर्द की अनुभूति को अभिव्यक्ति करना, दलितों को संघर्ष एवं प्रेरणा देने वाली है, इनकी कविताओं के प्रेरणा स्थान बाबासाहेब अम्बेडकर है, इन्होंने वर्ण-जातिव्यवस्था को ध्वस्त करने के लिए कविताएँ लिखी। साथ कैसे भारतीय गांव दलितों के लिए दमन एवं शोषण के लिए पोषक रहे हैं इस पर प्रकाश डालते हुए व्यवस्था पर करारा व्यंग किया है। साथ ही दलितों के जीवन में शिक्षा से ही परिवर्तन आ सकता है। इन सभी मुद्दो पर आलेख में विस्तार से प्रकाश डाला है।

दलित कविताएँ दर्द की अनुभूति को अभिव्यक्त करती है। साहित्य समाज को प्रतिबिंबत करता है। दलित कवयित्रि भी अपने समाज के दु:ख दर्द को अपनी कविता में अभिव्यक्त करती है क्योंकि साहित्य की संवेदनशीलता हृदय परिवर्तन करती है। हिंदी दलित कविता मानव मुक्ति के लिए लिखी गयी। इस संदर्भ में डॉ. जयप्रकाश कर्दम अपने

आलेख 'हिंदी दलित कविता के पचास वर्ष' में लिखते है, "साहित्य संवेदना का क्षेत्र है। 'वियोगी होगा पहला कवि आह से निकला होगा गान' सुमित्रानंदन पंत की कविता के ये शब्द संवेदना की ओर ही संकेत करते हैं। इस कविता पंक्ति के अनुसार कविता आह या दर्द से निकलती है। इससे यह आशय या अर्थ निकलता है कि अच्छी या सार्थक कविता वही होगी जो आहत मन या पीड़ा के गर्भ से निकलेगी और वही कविता जीवंत होगी। दर्द की अनुभूति जितनी गहरी और तीव्र होगी कविता उतनी ही अच्छी या उत्कृष्ठ होगी। कविता के संदर्भ में 'आह' मुहावारा नहीं सत्य है। और दलित कविता पर एकदम सट्टीक बैठता है।"[१] अगर कविता का इतिहास हम देखे तो हमे पता चलता है मनुष्य की संवेदनशीलता कविता निर्माण के लिए आवश्यक होती है। जो दूसरों के दर्द से विव्हल हो जाए वही सच्चा कवि कहलाता है। अगर एखाद मनुष्य विद्वान है लेकिन वह संवेदनशील नहीं है। तो वह केवल अपने लिए जीवन जीता है। कविता से कवि दूसरों का दर्द अपना समझकर उसे शब्दबद्ध करता है। यही सिद्धांत दलित कविता पर सट्टिक बैठता है। दलित कविता का सृजन शोषण, पीड़ा, अपमान के विरूद्ध हुआ। 'घृणा'इस कविता में सी. बी. भारती लिखती है, "अनवरत घृणा और तुम्हारी इसी घृणा ने / किया है हमें कमजोर जिससे हम होते रहें बार-बार गुलाम / लड़ भी न पाये थे देश के लिये कभी न एक होकर हम।"[२] कवयित्रि इस कविता से अपने मन की कसक को अभिव्यक्त करती है। घृणा के कारण मनुष्य कमजोर होता है। कमजोरी आदमी को गुलाम बनाती है। बरसों से दलित जाति के लोग घृणा एवं तिरस्कार सहते आए है। यह लेखिकाने पहचान लिया है। इसी कारण वह हात्तोत्साहित होते रहे है। लेखिकाने मनौविज्ञान का अध्ययन कर यह निष्कर्ष दिया है। वैसे ही 'विद्रोहिणी ' कविता में सुशीला टाकभौरे लिखती है, "माँ बाप ने पैदा किया था गूंगा!/ परिवेश ने लंगडा बना दिया। / चलती रही निश्चित परिपाटी पर / बैसाखियों के सहारे कितने पड़ाव आये! "[३] पीढ़ी जात व्यवसाय करने के कारण आर्थिक रूप से दलित पहले से ही कमजोर रहे है। उपर से माँ- बाप अशिक्षित होने के कारण उन्होंने हमे खड़े होने की ताकद नहीं दी। परिवेश अनुकूल न होने से बैसाखियों के साहारे अनेक पड़ाव जीवन में आए। अनेक समस्याओं के बावजूद दलित अपने आपको सँभालकर जीवन यापन करते आए है।

अपनी कविता 'औरत- औरत में अंतर है' में रजनी तिलक लिखती है, "एक सताई जाती है स्त्री होने के कारण, / दूसरी सताई जाती है स्त्री और दलित होने पर / एक तड़पती है सम्मान के लिए / दूसरी तिरस्कृत है भूख और अपमान से। / प्रसव पीड़ा झेलती फिर भी एक सी / जन्मती है एक नाले के किनारे / दूसरी अस्पताल में, / एक पायलट है / तो दूसरी शिक्ष से वंचित है, / एक सत्तासीन है, / दूसरी निर्वस्त्र घुमाई जाती है। "[४] कवयित्रि ने स्त्री जाति की पीड़ा को अपनी कविता में आवाज़ दी है। स्त्री होने के कारण दलित स्त्री को दोहरी मार झेलनी पड़ती है। सवर्ण जाति एवं दलित जाति की स्त्री दोनों दु:खित है। दोनों की समस्या अलग-अलग है। दलित स्त्री जाति से दलित होने के कारण सताई जाती है। वह भूख इस प्राथमिक समस्या से ग्रस्त है। बार-बार अपमान एवं घृणा के कारण उसका जीवन यातनाओं से भरा हुआ है। वह शिक्षा एवं सत्ता के अधिकारों से दूर है। उपर से सामाज में दलित है इस कारण कोई भी उसकी इज्जत के तार-तार करता हुआ दिखाई देता है। जैसे गांव में निर्वस्त्र कर घुमाना इतनी अमानुष यातनाएँ दलित स्त्री को झेलनी पड़ती है। इस संदर्भ में डॉ. जयप्रकाश कर्दम लिखते है, "दलित स्त्रियों की कोई इज्जत नहीं हे, उनकी अस्मिता तार-तार की जाती है। देश के विभिन्न भागों में दलित स्त्रियों के साथ आए दिन होने वाले बलात्कार इसका ज्वलंत प्रमाण शकून नहीं है। या तो गाँव गिद्ध की तरह उसके कांधे पर बैठा रहता है, जो कभी भी प्रहार कर उसे लहूलुहान बना सकता है।"[५] खैरलांजी हत्याकांड जैसे प्रकार आज भी समाज में घट्टित होते है तो शर्म से हम पानी-पानी हो जाते हैं। रजनी तिलक ने यह काफी ज्वलंत प्रश्न उठाया है। साथ ही अपनी कविता से सवर्ण स्त्री को भी न्याय देने का

प्रयत्न लेखिकाने किया है। शिक्षा, नौकरी आदि में वह अपनी जगह बना चुकी है। सत्ता में उसे हिस्सेदारी मिल रही है लेकिन सवर्ण स्त्री अपने सम्मान के लिए व्याकुल है। उसे मनुष्य का दर्जा नहीं मिला है।

दलित कविताएँ संघर्ष के लिए प्रेरणा देने वाली है। संघर्ष ही जीवन की मूल प्रवृत्ति है। संघर्ष से ही जीवन में परिवर्तन आ सकता है। दलितों के इतिहास में संघर्ष केंद्र में रहा है। इस संदर्भ में मेरली के पुन्नूस अपनी कविता 'दलित स्त्रियों का कारवाँ ' में लिखती है, "चिन्दियों में बिखरे समाज का नकाब, / कर रही है खुलासा इस सच्चाई का, / हम भी है इन्सान, दलितों में दलित नहीं। / चाहे बहाना पड़े खून का कतरा, / नहीं थमेगा, अब हमारा यह कारवाँ, / जब तक मिल नहीं जाता, / हमें इंसान का रुतबा। " [६] अपनी कविता में लेखिका स्त्री को संघर्ष के लिए उत्साहित करती है। दलित स्त्री को दोहरी मार की समस्या को लेखिकाने उठाया है। दलित स्त्री आपने आत्मसम्मान के लिए लढ़ती है। मानवीयता स्थापित करने के लिए जो कारवाँ निकल पड़ा है वह अब नहीं रुकेगा यह लेखिका स्पष्ट करती है। जो स्त्री सदियों से इतनी दमित थी। आज उस दमन का विस्फोट होता हुआ दिखाई देता है। जो स्त्री पहले ठीक से खड़ी होने की हिम्मत जुटा नहीं पाती थी आज वह अपनी मुक्ति के लिए चुनौती स्वीकारने के लिए तैयार है।

'जोक' इस कविता में सी. बी. भारती लिखती है, "मगर जोक नहीं जानती -कि एक दिन / उसका शिकार जरूर बिलबिलाएगा। / दर्द जब सहा न जायेगा और खून घट्ता जायेगा तब / जरूर वह गुस्साएगा। और मसल दी जायेगी जोंक तब / जोंक नहीं जानती " [७] एक दिन दिलित विद्रोह कर अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करेंगे। शोषण की परिस्थिति में परिवर्तन की आस लेखिका अपनी कविता से व्यक्त करती है। दलितों का जो समाज में शोषण हो रहा है एक दिन दिलित उसका जरूर सामना करेंगा। तब शोषण करनेवाले बोखला जाएगे। उनसे लड़ने की शक्ति दलितों में आएगी क्योंकि जिसका ज्यादा दमन होता है उससे बढ़कर उसका विद्रोह भी होता है।

अपनी कविता 'सपने सज जायेगे' सुशीला टाकभौरे लिखती है, "अपने आंसुओं को पोंछ कर सजाना होगा / टूट सपने स्वयं सिसकियों को बदलकर हुंकार में / लाचार बेबस जिन्दगी को बताना होगा सबल जीने की राह।"[८] स्त्री जाति को प्रेरित करते हुए लेखिका उसे रोने गिड़गिडाने से रोकती है। जिंदगी सबल होकर जीनी होगी। जो स्त्री परंपरा के चक्कर में फँसी हुई थी आज वह खुद को बदलकर बेबस जिंदगी से बाहर आना चाहती है। निष्कर्षत: कह सकते है स्त्री की स्थिति में बदलाव तो निश्चित रूप से आया है। जो स्त्री को आत्मविश्वास से पूर्ण जीवन यापन करने के लिए प्रेरित करता है।

अपनी कविता 'करोड़ों पदचाप हूं!' में रजनी तिलक लिखती है, "मैं - दलित अबला नहीं / नए युग की सूत्रपात हूं, सृष्टि की जननी, नए युग की आवाज हूं। "[९] अबला स्त्री में चेतना जगाते हुए लेखिका स्त्री को नए युग की निर्माता मानती है। स्त्री की जो परंपरागत प्रतिमा समाज सर्व परिचित थी। अब स्त्री उससे बाहर आ गयी है। वह जान गयी है कि वह सृजन करता है नव युग की आवाज है। रजनी तिलक की कविताओं में आत्मविश्वास पूर्ण स्त्री दिखाई देती है।

'बुद्ध चाहिए युद्ध नहीं 'इस कविता में रजनी तिलक लिखती है, "हम जंग नहीं चाहते, / जीना चाहते हैं/ हम विनाश नहीं सृजन चाहते हैं / हम युद्ध नहीं बुद्ध चाहते हैं।" [१०] म. गौतम बुद्ध के बातए हुए सूत्र अहिंसा एवं शांति को लेखिका अपनाती है। आज धर्म के नाम पर जो अराजकता फैली हुई है वह देश की एकता के लिए विनाश की ओर ले जाने वाली है। बौद्ध धर्म अहिंसा, शांति को अपनाता है। युद्ध विनाश की ओर ले जाता है तो बुद्ध सृजन की ओर जाता है। स्त्री की बदलती प्रतिमा में यह अच्छे संकेत है कि वह बुद्ध चाहिए युद्ध नहीं जैसी कविता का सृजन करती है। विश्व को शांति का संदेश देती है।

सभी कवित्रियों के प्रेरणा स्थान बाबासाहेब अम्बेडकर है। डॉ. अंबेडकर का मूल मंत्र है शिक्षित बनो, संघर्ष करो, संगठित रहो। इस संदर्भ में डॉ. जय प्रकाश कर्दम लिखते है, ''साठ के दशक में आकर इस स्वर में व्यापकता और तेजी आनी शुरू हुई जब कुछ आर्य समाज का प्रचार छोड़कर डॉ. अम्बेडकर और बौद्ध धर्म के प्रचार में संलग्न होने वाले और कुछ बाबा साहब अम्बेडकर के क्रांतिकारी विचारों की ऊर्जा लेकर उतरे नई पीढ़ी के रचनाकारों ने साहित्य सृजन के क्षेत्र में हस्तक्षेप करना शुरू किया। उस दौर की रचनाओं का प्रमुख स्वर बाबासाहब डॉ. अम्बेडकर का जयगान, भगवान बुद्ध की स्तुति या फिर सामाजिक सामंजस्य और सुधारवादी दृष्टिकोन तक सीमित रहा। इन रचनाओं की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इनमें व्यक्त आक्रोश और विरोध का स्वर तीखा होते हुए भी संयत, शालीन और रचनात्मक है।''[११] दलितों को वाणी देने का डॉ. अम्बेडकर ने किया। १९६० के बाद ही दलित साहित्य की सही अर्थ शुरूआत हुई है। उनके क्रांतिकारी विचारों ने दलितों में लेखन की ऊर्जा का निर्माण किया। इसीका परिणाम आज दलित साहित्य इतनी ऊँचाईयों पर है।

अपनी कविता 'लौट जाओ तुम' में सुशीला टाकभौरे लिखती है, ''सदियों से संतान सहा, फुले-अम्बेडकर ने न्याय दिया / समझे तभी हम समता और सम्मान। / जागृत विचार-धाराएं हमारी / बहने लगी हैं सही दिशा में, मत समझाओ गलत दिशा का ज्ञान।'' [१२] दलितों ने सदियों से अन्याय-अत्याचार सहा है। म. फुले एवं बाबा साहेब अंबेडकर इन्होंने दलितों की मुक्ति के किवाड़ खुले कर उनमें चेतना निर्माण का काम किया। समता एवं सम्मान की विचारधारा को समाज में प्रवाहित किया। जो समाज पहले भूख, अस्पृश्यता से ग्रस्त था आज वह शिक्षा प्राप्त अपनी एक अलग विचरधारा को लेकर आगे बढ़ रहा है। इसका श्रेय निश्चिति ही दोनों महापुरुषों को जाता है।

डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर जो दलितों के जीवन में मसीहा बनकर आए और एक आँधी की तरह सब दलितों में प्राण प्रतिष्ठा कर उन्हें सम्मान से जीवन यापन करने मार्ग दिखाया। डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर विद्वान थे साथ ही उनका व्यक्तित्व संवेदनशील था। संवेदनशीलता के कारण ही उन्होंने दलितों पर होने वाले अत्याचारों से दुखित होकर अपनी विद्वाता के बलपर दलितों को न्याय देने के लिए संघर्ष करते रहें। दलितों के जीवन में परिवर्तन लाने के लिए हमेशा प्रयत्नशील रहे है। ''अंबेडकरवादी दर्शन एवं विचारधारा से दलित चेतना का जन्म हुआ है। दलित चेतना की निर्मिति दमन और शोषण के प्रतिरोध तथा आत्म-सम्मान एवं अधिकार की मांग से हुई है। दलित कविता हिंसा और घृणा से युक्त हिंदू-व्यवस्था को नकारकर समता एवं करूणा पर आधारित व्यवस्था की मांग करती है। इस संदर्भ में दलित कविता बौद्ध धर्म एवं दर्शन से प्रेरणा ग्रहण करती है।'' [१३] अंबेडकरवादी विचारधारा ने जाति व्यवस्था पर करारा व्यंग किया है। हिंदू धर्म में जाति व्यवस्था में हरएक जाति ने अपनी उपजाति का निर्माण किया। यही से शोषण एवं दमन का सील-सीला शुरू हुआ। समता, स्वतंत्रता और बंधुत्व की स्थापना दलित कविताओं का मूल स्वर है जो फुले-अंबेडकरवादी चिंतन एवं विचार पर आधारित है। एक अर्थ में दलित कविता अतित और वर्तमान की सामाजिक एवं सांस्कृतिक आलोचना भी है।

दलित कविताएँ वर्ण -जाति व्यवस्था को ध्वस्त करने के लिए लिखी गयी। भारतीय समाज व्यवस्था का सबसे घृणीत रूप एक जाति का दूसरी जाति को निचा मानना है। भारतीय समाजव्यवस्था में यह मानसिकता है अपने निचे कोई न कोई होना चाहिए। जिससे सरल शब्द में 'गुलाम' कह सकते है। इसी कारण यहा वर्ण व्यवस्थाने जन्म लिया। ''वर्ण-जाति-व्यवस्था को ध्वस्त करने हेतु उस पर जबरदस्त प्रहार करने का काम दलित कविता ने किया है। दलित कविता ने वर्ण -जाति -व्यवस्था को ध्वस्त भले ही नहीं किया हो, उसकी चुलों को हिला अवश्य दिया है।'' [१४] अपनी कविता तब, 'तुम्हारी निष्ठा क्या होती ? ' में कवल भारती लिखती है, ''यदि यह विधान लागू हो जाता (तुम द्विजों पर) / कि तुम्हें

धन-सम्पत्ति रखने का अधिकार नहीं। / तुम जिन्दा रहो हमारी जूठन पर, / हमारे दिये हुए पुराने वस्त्रों पर, / तुम्हें अधिकार न हो पढ़ने- लिखने का, / तुम्हारे बच्चे सेवक बनें हमारे / पीढ़ी-दर-पीढ़ी / हम रहें तुम्हारे शासक। / तब, तुम्हारी निष्ठा क्या होती ? "[१५] लेखिका अपने अंदर का विद्रोह अपनी कविता से व्यक्त करती है। दलित को उच्चवर्णीयों ने हमेशा गुलाम समझा, उन्हें संपत्ति संग्रह करने के अधिकार से वंचित रखा। हमेशा उसे जूठन पर अपना जीवन जीने के लिए मजबूर किया गया। अगर यह सारे विधान शोषण करनेवालो पर लागू किए गये तो फिर उनकी निष्ठा क्या होगी? अपनी कविता बलिहारी मन में कावेरी लिखती है, "जिंदगी की खाईयां ढेर सारी / आती रही सामने परिवार, जाति, समाज / और धर्म की खाईयां / राष्ट्र-अन्तर्राष्ट्र बांटती अस्मिता को "[१६] संपूर्ण देश आज धर्म के नाम पर विभाजित होने की राह पर है। आज धर्म-धर्म में दरार पड़ती दिखाई देती है। राष्ट्र भी आज धर्म के नाम से पहचाने जाने लगे है। वैश्वविक स्तर की समस्या पर लेखिकाने प्रकाश डाला है।

रजनी तिलक 'वजूद है' इस कविता में लिखती है, जानते हो न ? एक जमाने में अखबारों में / हमारी परछाइयां भी वर्जित थी / अभिव्यक्ति पर पाबंदी थी / तब मुर्दो से अछूतों में स्वाभिमान की चिंगारी / फूट़ती थी। "[१७] दलितों को अभिव्यक्ति का स्वतंत्र्य नहीं था। यहा तक की दलितों की परछाई को भी अशुभ माना जाता था। तब डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर इन्होंने संविधानिक अधिकारों द्वारा दलितों को अभिव्यक्ति का स्वातंत्र प्रदान किया। दलित कविता का मूल स्वर या चेतना मनुष्यता है।

दलितों के लिए गांव दमन और शोषण के लिए पोषक है। "सवर्ण कवि को गाँव बहुत अच्छे लगते है और वह ग्राम जीवन पर मुग्ध होकर लिखते हैं 'अहा, ग्राम्य जीवन भी क्या है' लेकिन दलित कवि के लिए गाँव के अंदर ऐसा कुछ भी दिखाई नहीं देता जिसकी वह प्रशंसा कर सके। दलित के लिए गाँव दमन और शोषण के कारखाने है, जहाँ पर उसे कदम-कदम पर घृणा, अपमान, उत्पीड़न और अस्पृश्यता का दंश मिलता है। दलित निरंतर आतंक के साये में जीते हैं। कब, किस दिन, किस क्षण उस पर जुल्म और ज्यादती का कहर टूट पड़े निरंतर यह आशंका बनी रहती है, और यह आशंका उसे कभी सहज नहीं रहने देती।"[१८] आज भी आधुनिक काल में गांवों में छुआ-छूत दिखाई देती है। काफी मात्रा में अंधविश्वास, पंरपरा, रूढ़ि का प्रभाव है। आज भी गांवों में दलितों को मंदिर में प्रवेश नकारा जाता है। दलितों को जिंदा जलाया जाता है। उस तुलना में नगरों में अस्पृश्यता नहीं के बरा-बर है। दलित लेखिकाओं ने इस समस्या को अपनी कविता में अभिव्यक्त किया है। मेरा गांव कविता में कावेरी लिखती है, "ब्याह-बारात का काम कराते / देकर जूठन बहकाते / जब मरता है कोई जानवर / दे-देकर गाली उठवाते / दिन-रात गुलामी कर-करके / थक गए बिबाई फटे पांव। / मेरा गांव, कैसा गांव? / न कहीं ठौर, न कहीं ठांव। "[१९] त्यौहार, विवाह समारोह में आज भी दलितों को जूठन से अपनी पेठ की आग को शांत करना पड़ता है। जब गांव में कोई जानवर मरता है तो उसे उठ़ाने का काम दलितों को करना पडता है। उपर से दलितो गांलिया भी दी जाती है। इस गांव में दलितों की अलग बसतियाँ है। गांव से दूर उनका स्थान है वैसे ही उनके पिने के पानी की अलग व्यवस्था रहती है। आज यह स्थिति अनेक गांवों में बनी हुई है। इस गांवों में दलितों का क्या स्थान है ? इस पर लेखिका प्रश्न करती है।

व्यवस्था पर करारा व्यंग करते हुए रजत रानी मीनू अपनी कविता 'मरघट से गुजर कर' में लिखती है, "तू जिन्हें देख रही है / वे सब जिंदा हैं- पर लाश है / हर पांच साल बाद / होते हैं हरे इनके दिन, घास की तरह। / मरा सिर लगा चकराने। / और दिल घबराने / क्या इतनी संवेदन-शून्य हो गई / मेरे देश की व्यवस्था? / सब सुधार योजनाएं हो गई हैं बांझ? / पार्लियामेंट निष्प्राण। क्या देश ने / सचमुच पूरी कर ली प्रगति ? "[२०] दलितों पर होने वाले अन्ययों की प्रति यह व्यवस्था उदासीन है। व्यवस्था का दलितों के प्रति असंवेदनशील व्यवहार दहला देने वाला है। अपने देश में

अनेक दलित हत्याकांड हुए। आज भी स्थिति जो की त्यों बनी हुई है यह कहीं न कहीं असंवेदनशीलता है इस ओर दलित लेखिकाने ध्यान केंद्रीत किया है।

शिक्षा से ही अपने समाज की उन्नति हो सकती है। इस बाबा साहेब अंबेडकर के मूलमंत्र को दलित कवियत्रियों समझ लिया है। इस कारण शिक्षा को अपनी कविता में महत्वपूर्ण स्थान देती है। पूनम तुषाम माँ मुझे मत दो ' में लिखती है, "मुझको पढ़ना आगे बढ़ना / खुद को नए साँचे में गढ़ना / और सबको है जगाना / सबको उनका हक दिलाना / माँग कर खाने की आदत / और नसीहत / माँ मुझे मत दो।" [२१] अपनी माँ से लेखिका निवेदन करती है कि, मुझे शिक्षा प्राप्त करने दो क्योंकि शिक्षा से जीवन में सुधार आ सकता है। यह समझ लेखिका को आ गयी है। शिक्षा एक यह शक्ति है जिसे पाकर मनुष्य अपने अधिकारों के प्रति जागृत होता है।

दलित कविता यथार्थ का चित्रण करती है। दलित कविता में रंजकता नहीं होती है। अपने समाज की दयनीय स्थिति का चित्रण कविता में होता है। रजनी बाला अनुरागी अपनी 'हमारी कविता ' लिखती है, "तुम कल्पना पर होकर सवार/ लिखते हो कविता/और हमारी कविता/ रोटी बनाते समय जल जाती है अक्सर/कपड़े धोते हुए/पानी में बह जाती कितनी ही बार/ झाड़ू लगाते हुए/ साफ हो जाती है मन से/ पौछा लगाते हुए/ गँदले पानी में निचुड जाती है।" [२२] दलित कविता सौंदर्य, अलंकार, छंद की अपेक्षा वास्तविकता को महत्व देती है। संक्षेपत: मानवीय संवेदना ही दलित कविता है।

निष्कर्ष:-

दलिता कविताएं मानवीय संवेदना से जुड़ा साहित्य है। दलित कविताएँ सामजिक सम्मान और स्वाभिमान के लिए लिखी गयी है। दलित कविताएँ भारतीय गँवो का दस्तावेज है। आज चाहे समाज प्रगतिशिल होने की बात करता हो परंतु परंपरागत रीति रीवाज आज गांवों में मौजूद है। दलित लेखिकाओं द्वारा भूख की समस्या को उठाया गया है। समाज आज भी अमानवियता दिखाई देती है। किसी को भर पेट खान मिल रहा है तो किसी को भूखे पेट सोन पडता है। यह वास्तव दलित लेखिकाओं ने समाज के सामने रखा है। दलित लेखक को सबसे अधिक त्रस्त किया तो वह भूख की समस्या है। दलित कविता अंलकार, छंद की अपेक्षा मानवीय संवेदनाओं से जुड़ा साहित्य है। दलित कविता समता, बंधुता, करूणा के आधार पर रची गयी है।

संदर्भ सूची :-

१. हिंदी दलित कविता के पचास वर्ष, डॉ. जयप्रकाश कर्दम, वागर्थ, अंक २३४ जनवरी २०१५, सं एकांत श्रीवास्तव एवं कुसुम खेमानी, पृ. ३३-३४
२. दलित चेतना की कविताएं, सं. राम चंद्र एवं प्रवीण कुमार, स्वराज प्रकाशन, दिल्ली २०१४ पृ. ७७-७८
३. वहीं - पृ. ११०
४. वहीं - पृ. १४८
५. हिंदी दलित कविता के पचास वर्ष - डॉ. जयप्रकाश कर्दम - पृ ३८
६. समकालीन भारतीय दलित महिला लेखन सं रजनी तिलक, रजनी अनुरागी, स्वराज प्रकाशन, दिल्ली २०११, पृ. ५६
७. दलित चेतना की कविताएं - सं. रामचंद्र एवं प्रवीण कुमार - पृ.७८-७९
८. वहीं - पृ. १०४
९. वहीं - पृ. १४६
१०. वहीं - पृ. १५०

११. हिंदी दलित कविता के पचास वर्ष - डॉ. जयप्रकाश कर्दम - पृ. ३७-३८
१२. दलित चेतना की कविताएं - सं. रामचंद्र एवं प्रवीण कुमार - पृ. १०७-१०८
१३. वहीं - पृ. ०८
१४. वहीं - पृ. ३७
१५. वहीं - पृ. ११७
१६. वहीं - पृ. १२७
१७. वहीं - पृ. १५१
१८. हिंदी दलित कविता के पचास वर्ष - डॉ. जयप्रकाश कर्दम - पृ .३८
१९. दलित चेतना की कविताएं - सं. रामचंद्र एवं प्रवीण कुमार - पृ. १३१-३२
२०. वहीं - पृ. १६४
२१. समकालीन भारतीय दलित महिला लेखन सं रजनी तिलक, रजनी अनुरागी, स्वराज प्रकाशन, दिल्ली २०११ पृ. ५०
२२. हमारी कविता रजनी बाला अनुरागी